*भारत में फिनटेक क्रांति - नवोन्मेष, समावेशन और विनियमन**

एम के जैन

श्री इंजेती श्रीनिवास (अध्यक्ष, आईएफएससीए), श्री बी. पी. कानूनगो (निदेशक, सीएएफआरएएल), आईआईएम अहमदाबाद और सीएएफआरएएल के संकाय सदस्य, और इस सम्मेलन के प्रतिष्ठित प्रतिभागियों, आप सभी को हार्दिक अभिवादन !

मुझे फिनटेक पर आयोजित इस अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान सम्मेलन में उपस्थित होकर खुशी हो रही है। भारत में फिनटेक क्रांति के संदर्भ में 'नवोन्मेष, समावेशन और विनियमन' विषय वस्तुत: अत्यंत समकालिक और प्रासंगिक है।

नई तकनीक अक्सर अर्थव्यवस्थाओं को नई ऊर्जा और नया आकार देती है। पिछले कुछ दशकों में, सूचना प्रौद्योगिकियों का शायद अर्थव्यवस्था और विशेष रूप से वित्तीय सेवाओं पर सर्वाधिक परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ा है। वित्त और सूचना प्रौद्योगिकी के अन्तर्सम्बन्ध, जिसे अब फिनटेक के नाम से जाना जाता है, ने वित्त के क्रमविकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पिछले कुछ वर्षों में, प्रौद्योगिकी ने वित्तीय सेवाओं के वैश्वीकरण को बढ़ावा देने के साथ-साथ इन सेवाओं की क्षमता और गति में एक विवर्तनिक बदलाव की शुरुआत की है और उपभोक्ताओं को सुविधा के साथ-साथ बेहतर अनुभव भी प्रदान किया है।

वर्तमान फिनटेक क्रांति अलग क्यों है?

वर्तमान फिनटेक क्रांति, जो 2007-08 के उत्तरी अटलांटिक वित्तीय संकट के तुरंत बाद शुरू हुई, कई मायनों में अद्वितीय है। यह क्रांति बढ़ी हुई कंप्यूटिंग शक्ति, कृत्रिम मेधा और मशीनी अधिगम (लर्निंग), एपीआई जैसी नई तकनीक से सुसज्जित है, जो वित्तीय सेवाएं प्रदान करने में बिग डेटा का फायदा लाभ उठाते हैं। इसके अलावा, नए प्रतियोगियों और नए कारोबार मॉडल का उदय हो रहा है।

वर्तमान फिनटेक क्रांति से पहले, वित्तीय सेवाओं के डिजिटलीकरण ने बैंकों और वित्तीय संस्थानों को अपने उपभोक्ताओं से संबंधित संरचित डेटा रखने की अनुमति दी थी, जिसका उपयोग ग्राहक के जोखिम प्रोफ़ाइल की बेहतर समझ के लिए किया जाता था। हालाँकि, बिग डेटा एनालिटिक्स के उद्भव के कारण, वैकल्पिक अर्ध-संरचित और असंरचित डेटा का उपयोग करके ग्राहक की प्राथमिकताओं और व्यवहार पर और भी बेहतर अंतर्दृष्टि प्राप्त की जा सकती है। इसके अलावा, एनालिटिक्स को वित्तीय संस्थान द्वारा स्वयं निष्पादित करने के बजाय, नवीनतम फिनटेक को आउटसोर्स किया जा रहा है। वास्तव में, वित्तीय क्षेत्र, विनियमित संस्थाओं और विशाल भविष्य की संभावनाओं वाले फिनटेक के बीच इस सहक्रियात्मक सहयोग से लाभान्वित हो रहा है।

फिनटेक से लाभ

प्रौद्योगिकी ने प्रवेशात्मक बाधाओं को कम कर दिया है और फिनटेक को वित्तीय सेवाओं में प्रवेश करने की अनुमति दी है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इसने वित्तीय सेवाओं को इस तरह से विखंडित होने दिया है कि यह परिचालन के निचले स्तर पर भी आर्थिक रूप से व्यवहार्य है। बदले में, बेहतर ग्राहक अनुभव और सुविधा से उपभोक्ताओं को लाभ हुआ है। भारत में भुगतान क्षेत्रक नवोन्मेष इसका एक विशिष्ट उदाहरण है।

फिनटेक द्वारा पेश किए गए प्रमुख मूल्यवान प्रस्तावों में से था - विनियमित संस्थाओं के समान लेकिन कम लागत पर वित्तीय सेवाएं उपलब्ध कराना। भारतीय ब्रोकरेज उद्योग में फिनटेक का हस्तक्षेप इसका एक ज्वलंत उदाहरण है।

बड़ी प्रौद्योगिकी कंपनियां या बिग टेक (जैसा उन्हें लोकप्रिय रूप से कहा जाता है) जैसे कि अल्फाबेट, मेटा, अमेज़ॅन, आदि ने भी वित्तीय सेवाओं में विस्तार किया है। ये कंपनियां गैर-वित्तीय उत्पादों के साथ-साथ प्रासंगिक या अंतर्निहित वित्तीय उत्पाद प्रदान करने हेतु नेटवर्क प्रभाव सहित अपने मौजूदा वृहत् उपभोक्ता आधार से डेटा का लाभ उठाती हैं। कई अधिकार-क्षेत्रों में, भुगतान

---

* भारतीय रिज़र्व बैंक के उप गवर्नर, श्री एम के जैन द्वारा, 10 मार्च 2023 को अहमदाबाद में भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम) अहमदाबाद और सेंटर फॉर एडवांस्ड फाइनेंशियल रिसर्च एंड लर्निंग (काफराल) द्वारा, फिनटेक: नवोन्मेष, समावेशन और विनियमन विषय पर, संयुक्त रूप से आयोजित अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान सम्मेलन में दिया गया भाषण।

प्रणालियों के अलावा, बिग टेक ने क्रेडिट स्कोरिंग और ऋण देने में भी सफलतापूर्वक विस्तार किया है।

फिनटेक से जोखिम

वित्तीय व्यवसाय करने वाले प्लेयर के प्रकार या उसमें अंतर्निहित प्रौद्योगिकी के प्रकार के बावजूद, इसमें कुछ बुनियादी जोखिमों का खतरा होता है।

1. विनियमित संस्थाओं या नए प्रतियोगियों के लिए, कारोबार मॉडल के आधार पर, उन्हें सामान्य ऋण, बाजार और तरलता जोखिमों के अलावा कानूनी, प्रतिष्ठा, शासन और परिचालन जोखिमों का सामना करना पड़ता है।
2. ग्राहकों के दृष्टिकोण से, प्रमुख जोखिमों में कपटपूर्ण बिक्री, भेदभाव, डेटा गोपनीयता और सुरक्षा शामिल हैं।
3. विनियामक के नजरिए से, वित्तीय स्थिरता, बाजार की अखंडता और ग्राहक सुरक्षा से जुड़े जोखिम मौजूद होते हैं।

हम इन जोखिम क्षेत्रों में अपनी विनियामकीय और पर्यवेक्षी कार्रवाई की निगरानी और निर्धारण करते हैं। हालाँकि, नए प्रतियोगी और नई प्रौद्योगिकियां इन जोखिमों को और बढ़ा सकती हैं। उदाहरण के लिए, ऋण देने के क्षेत्र में काम कर रहे फिनटेक ने वैश्विक स्तर पर असुरक्षित ऋण की उपलब्धता को बढ़ावा दिया है। ऐसे ऋण अक्सर मशीनी अधिगम (लर्निंग) मॉडल द्वारा संचालित होते हैं। हालाँकि, चूक के संदर्भ में इन मॉडलों की प्रभावशीलता पूरी तरह से स्थापित नहीं हो पाई है, खासकर आर्थिक मंदी के दौरान। इन मॉडलों की कोई भी महत्वपूर्ण विफलता न केवल नए प्रतियोगियों तक सीमित होगी बल्कि उनके संपर्क में आने वाले विनियमित संस्थाओं पर भी उसका असर पड़ेगा।

मॉडलों का उपयोग ऋण के विस्तार में समुचित व्यवहार का प्रश्न भी लाता है। यह आवश्यक है कि निर्णय लेने के लिए अत्यधिक स्वचालित फिनटेक कारोबार मॉडल, मॉडल के विकास एवं उपयोग और अंतिम निर्णय लेने में अतिरिक्त प्रक्रियाओं, नियंत्रण और सुरक्षा उपायों के माध्यम से निष्पक्षता की आपेक्षाओं का ध्यान रखें।

प्रौद्योगिकी की अविश्वसनीयता या भेद्यता का जोखिम फिनटेक तक सीमित नहीं है। चूंकि, उनका व्यवसाय काफी हद तक स्वचालन पर निर्भर है, इसलिए उनकी भेद्यता भी अधिक है।

फिनटेक को ग्राहक सुरक्षा के प्रति सचेत रहने की जरूरत है। फिनटेक द्वारा कपटपूर्ण बिक्री, धोखाधड़ी या कदाचार उन उपभोक्ताओं को नुकसान पहुंचा सकता है जिनकी वे सेवा करना चाहते थे। फिनटेक क्षेत्रक के टिकाऊ विकास के लिए इस जोखिम का सावधानीपूर्वक प्रबंधन जरूरी है। उपभोक्ता विश्वास में हानि इस क्षेत्रक की वृद्धि को अपूरणीय क्षति पहुँचा सकता है। इसलिए, जहाँ, विनियामक हमेशा ग्राहक सुरक्षा के बारे में चिंतित रहते हैं, वहीं फिनटेक को यह सुनिश्चित करने हेतु कि उनके कारोबार का आधार सुरक्षित है, और भी अधिक जागरूक, सतर्क और सक्रिय रहना चाहिए।

वित्तीय समावेशन

ऐसा वित्तीय क्षेत्र जो वित्तीय समावेशन को प्राथमिकता नहीं देता है, वह आर्थिक संवृद्धि के लाभों को समाज के सभी स्तरों तक वितरित नहीं कर सकता है[1]। वित्तीय समावेशन में किफायती लागत पर बचत और निवेश के रास्ते और ऋण तक पहुंच प्रदान करना शामिल है। इससे अर्थव्यवस्था और समाज को लाभ होता है क्योंकि इससे आर्थिक संवृद्धि बढ़ती है और आर्थिक असमानता में कमी आती है। जिन देशों में बड़ी संख्या में लोग बैंकिंग सेवाओं से वंचित हैं, वहां वित्तीय नवोन्मेष वित्तीय समावेशन को बढ़ाने में मदद कर सकता है, खासकर अगर उन्हें डिजिटल पहचान प्रणालियों के साथ जोड़ा जाए।

फिनटेक, वैकल्पिक डेटा का उपयोग, प्रौद्योगिकी सहूलियतों से संपूरित एंड-टू-एंड डिजिटलीकरण की बदौलत, क्रेडिट स्कोर का अभाव, बोझिल दस्तावेज़ीकरण, मैन्युअल प्रक्रियाओं, आदि के कारण से मौजूद ऋण अंतराल को पाट सकता है।

रिज़र्व बैंक नवोन्मेष केंद्र (आरबीआईएच), आरबीआई के साथ मिलकर किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) ऋण के एंड-टू-एंड डिजिटलीकरण का संचालन कर रहा है। इस परियोजना में बैंकों में विभिन्न प्रक्रियाओं के स्वचालन और सेवा प्रदाताओं के साथ उनकी प्रनाली के एकीकरण की परिकल्पना की गई है जो केसीसी

[1] https://www.imf.org/-/media/Files/Publications/WP/2021/English/wpiea2021221-print-pdf.ashx

ऋण वितरण को अधिक कुशल और किफायती बनाएगा।

विनियामकीय दृष्टिकोण

फिनटेक क्षेत्र को विनियमित करने का कोई भी दृष्टिकोण निश्चित रूप से पांच मूलभूत उद्देश्यों से प्रेरित होगा - (i) वित्तीय स्थिरता, (ii) उपभोक्ता संरक्षण, (iii) वित्तीय प्रणाली की अखंडता, (iv) प्रतिस्पर्धा और (v) संबंधित क्षेत्रक (सेक्टर) का सुव्यवस्थित विकास।

इन व्यापक उद्देश्यों के तहत, विनियमन के विभिन्न दृष्टिकोण हैं। स्पेक्ट्रम के एक छोर पर, एक 'हैंड-ऑफ' दृष्टिकोण है जो इस क्षेत्र को बिना किसी विनियामकीय हस्तक्षेप के स्वतंत्र रूप से संचालित करने और विकसित करने की अनुमति देने की वकालत करता है। हालाँकि यह नवोन्मेष के लाभों का दोहन करने की अनुमति देता है, लेकिन यह वित्तीय प्रणाली और ग्राहकों को प्रतिकूल परिणामों से बचाने में विफल होने की संभावना को जोखिम में डालता है।

स्पेक्ट्रम के दूसरे छोर पर 'यथास्थिति वाला' दृष्टिकोण है जिसका उद्देश्य नई गतिविधि की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु बिना किसी छूट के मौजूदा ढांचे को बनाए रखना है। इस दृष्टिकोण के तहत, फिनटेक उत्पाद और सेवाओं को पारंपरिक वित्तीय उत्पाद या सेवा की तरह ही विनियमित किया जाता है। जोखिमों को नियंत्रित करने के दृष्टिकोण से, यह सबसे अच्छा तरीका प्रतीत हो सकता है क्योंकि यह आजमाए हुए और परखे हुए नियमों को लागू करता है। हालाँकि, नवोन्मेष के लाभ से हम वंचित हो सकते हैं।

भारत में, आरबीआई ने फिनटेक के नवोन्मेष और उसके कारण अनूठे जोखिमों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करते हुए बीच का रास्ता खोजने का प्रयास किया है।

2016 का एनबीएफसी - अकाउंट एग्रीगेटर फ्रेमवर्क, 2017 के एनबीएफसी - पीयर टू पीयर उधार दिशानिर्देश और हालिया डिजिटल उधार दिशानिर्देश, उभरते जोखिमों से निपटने के लिए अनुकूली विनियमन के उदाहरण हैं।

पी2पी विनियमों को प्रारंभिक चरण में पेश किया गया था, जिससे भारत को अन्य अधिकार- क्षेत्रों में देखी गई विफलताओं से बचने में मदद मिली, साथ ही ऋण मध्यस्थीकरण का एक अभिनव तरीका लाना संभव हुआ। इसी तरह, अकाउंट एग्रीगेटर (एए) से संबंधित दिशानिर्देश, एक मजबूत डेटा गोपनीयता व्यवस्था का निर्माण करते हुए मुक्त बैंकिंग से संबंधित नवोन्मेषों को सुविधाजनक बनाते हैं। पिछले साल के डिजिटल ऋण दिशानिर्देश दो अच्छी तरह से स्थापित सिद्धांतों की पुनरावृत्ति थे, अर्थात्, (i) ऋण व्यवसाय एक विनियमित गतिविधि है और (ii) आउटसोर्सिंग व्यवस्था में अनुपालन सुनिश्चित करने का दायित्व विनियमित इकाई पर है।

आरबीआई ने नियंत्रित वातावरण में नवीन उत्पादों या सेवाओं के लाइव परीक्षण के लिए 2019 में विनियामक सैंडबॉक्स ढांचे की शुरुआत की। विनियामक सैंडबॉक्स पहल से मिलने वाली सफलता में हाल में शुरू किया गया UPI123Pay शामिल है, जो 400 मिलियन से अधिक फीचर फोन मोबाइल ग्राहकों को इंटरनेट कनेक्शन के बिना भी UPI भुगतान करने में सक्षम बना सकता है। इसके अलावा, विनियामक सैंडबॉक्स का पूरा लाभ उठाने के लिए, पिछले साल अंतर-परिचालनीय सैंडबॉक्स (आईओआरएस) के लिए एक रूपरेखा की भी शुरुआत की गई। यह रूपरेखा वित्तीय क्षेत्र के एक से अधिक विनियामकों के विनियामक दायरे में आने वाली नवीन उत्पादों/सेवाओं के परीक्षण की सुविधा प्रदान करता है।

2022 में, वित्तीय क्षेत्र में नवोन्मेष को बढ़ावा देने के अपने प्रयासों के तहत, आरबीआई, रिज़र्व बैंक नवोन्मेष केंद्र (आरबीआईएच) की स्थापना करेगा। इस उभरते क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करने के लिए आरबीआई के भीतर 2022 में एक नया फिनटेक विभाग स्थापित किया गया था। इसका उद्देश्य न केवल इस क्षेत्र में नवोन्मेष को बढ़ावा देना है, बल्कि इससे जुड़ी चुनौतियों और अवसरों की पहचान करना और समय पर उनका समाधान करना भी है।

विनियामक ढांचे के भीतर, इकाई-आधारित विनियमन के विपरीत गतिविधि-आधारित विनियमन जोर पकड़ रहा है। इकाई-आधारित विनियामकीय अपेक्षाएं, किसी गतिविधि को लक्षित करने के बजाय, विनियमित इकाई से संबंधित विवेक, आचरण और अभिशासन हैं। दूसरी ओर, गतिविधि-आधारित विनियमन सभी विनियमित संस्थाओं की गतिविधि पर ध्यान केंद्रित करते

हुए समान नियम लागू करने का प्रयास करती है। उदाहरण के लिए, व्यष्टि-वित्त ऋणों के लिए विनियामकीय ढांचे की हालिया समीक्षा में, बैंकों और एनबीएफसी में इस प्रकार के ऋण देने के लिए, व्यष्टि-वित्त की एक सामान्य परिभाषा, समान कारोबार आचरण और निष्पक्ष व्यवहार अपेक्षाओं, आदि के माध्यम से समरूप विनियमन प्रदान करने का प्रयास किया गया है।

फिनटेक क्षेत्र - आगे की राह

भारत के पास दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा फिनटेक परितंत्र है। जहाँ, विनियमन एक सहायक भूमिका निभा सकता है, वहीं फिनटेक को स्वयं नवोन्मेष और उससे उत्पन्न होने वाले जोखिमों के बीच संतुलन स्थापित करना होगा। स्वाभाविक रूप से, ऐसे परितंत्र का लचीलापन अन्य बातों के साथ-साथ अनुषंगिकों के आचरण की स्व-निगरानी पर भी निर्भर करेगा। इसलिए, फिनटेक क्षेत्र के नजरिए से, नियमों और मानकों को स्थापित करने और लागू करने के लिए स्व-विनियमन एक उपयोगी साधन हो सकता है।

इस क्षेत्र को स्वयं को एक स्व-विनियामक संगठन के तहत संगठित करने का प्रयास करना चाहिए जो बदले में सदस्य फिनटेक संस्थाओं के आचरण की निगरानी कर सके। यह दृष्टिकोण ग्राहक के हितों की रक्षा करने और फिनटेक संस्थाओं में उच्च स्तर के अभिशासन मानक को बढ़ावा देने के उद्देश्य में भी सहायक है। ऐसे स्व-विनियामक संगठन की भूमिकाओं में आचरण के लिए मानक स्थापित करने के साथ-साथ, क्षेत्रक (सेक्टर) और विनियामकों के बीच पुल का कार्य करना भी शामिल है।

विनियमन इस क्षेत्र को सही रास्ते पर रखने के लिए महज एक रेलिंग है। हालाँकि, नवोन्मेष की क्षमता से इतर, इस क्षेत्र का विकास काफी हद तक दो महत्वपूर्ण तत्वों पर निर्भर करेगा। ये दो तत्व हैं (i) ग्राहक केंद्रीयता और (ii) अभिशासन। फिनटेक के लिए अपने नवोन्मेष के केंद्र में ग्राहकों को रखना और संस्कृति के हिस्से के रूप में अभिशासन के उच्च मानकों का पालन करना आवश्यक है।

अपने उत्पादों और प्रक्रियाओं को विकसित करते समय, फिनटेक को ग्राहक सुरक्षा के दृष्टिकोण से तीन बुनियादि सिद्धांतों का पालन सुनिश्चित करना चाहिए -

i. सबसे पहला, ग्राहक-केंद्रित सुदृढ़ उत्पाद डिज़ाइन करें जो ग्राहकों को फिनटेक प्रेरित नुकसान, जो साइबर सुरक्षा उल्लंघनों, तकनीकी गड़बड़ियों, धोखाधड़ी, आदि से होते हैं, से बचाएं।

ii. दूसरा, ग्राहक की उपयुक्तता और औचित्य सुनिश्चित करें। कपटपूर्ण बिक्री या अविवेकपूर्ण ऋण न दें।

iii. तीसरा, सुनिश्चित करें कि मॉडलों में किसी भी अंतर्निहित पूर्वग्रह से निष्पक्ष तरीके से निपटा जाए।

जहां तक अभिशासन का सवाल है, सुअभिशासन को अपनाने और उसका पालन करने के महत्व को जरूरत से अधिक महत्व नहीं दिया जा सकता है। अनेक विफलताओं का मूल कारण कुअभिशासन है। इस क्षेत्रक (सेक्टर) के सतत विकास के लिए, यह आवश्यक है कि फिनटेक, जवाबदेही, निष्पक्षता, पारदर्शिता और स्वतंत्रता के मूल्यों को विकसित करें। निदेशक मंडल को विभिन्न हितधारकों के परस्पर विरोधी हितों के संतुलनकर्ता के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए पर्याप्त रूप से सशक्त होना चाहिए और उसमें पर्याप्त अनुभव और स्वतंत्रता होनी चाहिए।

निष्कर्ष

अंत में, भारत में फिनटेक क्रांति अच्छी तरह से चल रही है, और यह हमें वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने, वित्तीय क्षेत्र की दक्षता में सुधार करने और लाखों लोगों के लिए नए आर्थिक अवसर पैदा करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करती है। इस देश ने ओपन एपीआई और डिजिटल सार्वजनिक वस्तुओं का एक समूह तैयार किया है जिसका लाभ उद्योग द्वारा वित्तीय और सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देने और नवोन्मेष के लिए उठाया जा सकता है।

रिज़र्व बैंक का दृष्टिकोण विवेक के सिद्धांतों से समझौता किए बिना, विनियमन के साथ नवोन्मेष को संतुलित करना रहा है। फिनटेक सेक्टर को भी स्व-विनियमन पर ध्यान देने और यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि प्रौद्योगिकी, नैतिकता, ग्राहक सुरक्षा और डेटा गोपनीयता से संबंधित मुद्दों का समाधान किया जाए।

भारत ने इस वर्ष समूह-20 (जी20) की अध्यक्षता संभाली है, और इससे देश को फिनटेक के क्षेत्र में, विशेष रूप से डिजिटल भुगतान प्रणालियों में अपना नेतृत्व प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है। जहाँ, भारत ने अपनी घरेलू भुगतान प्रणालियों को

विकसित करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है जिन्हें विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त है, वहीं यह सीमापार भुगतान प्रणालियों में नवोन्मेषों में भी योगदान दे सकता है। इस संदर्भ में, सीबीडीसी महत्वपूर्ण है। भारत पहले से ही अपने सीबीडीसी का परिचालन कर रहा है, यह सीबीडीसी की सीमापार अंतर-परिचालनीयता और प्रभावी इंटरफेसिंग के लिए मानदंड विकसित करने की आवश्यकता पर चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए तैयार है, ताकि सस्ते, कुशल और तेज सीमापार भुगतान की क्षमता विकसित हो सके।

मुझे पूरी उम्मीद है कि इस सम्मेलन के कई पेपर में फिनटेक के युग में नवोन्मेष, समावेशन और विनियमन से जुड़े अवसरों और मुद्दों पर गहराई से चर्चा की जाएगी। मैं सार्थक चर्चाओं की आशा करता हूं जो विमर्श को आगे बढ़ाएंगी और कुछ ज्ञानवर्धक नीतिगत अंतर्दृष्टि भी प्रदान करेंगी। इस सम्मेलन की मेजबानी करने और मुझे इसे संबोधित करने का अवसर देने के लिए भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद और काफराल (सीएएफआरएएल) को मैं पुन: धन्यवाद देता हूं।